Hume : Impressions and Idea

ह्यूम का अनुभववाद मनोवैज्ञानिक मान्यताओं पर आधारित है। मनोवैज्ञानिक अनुभववाद के अनुसार मनुष्य के मन की संरचना ही ऐसी है कि उसे वस्तुओं एवं उनसे संबंधित तथ्यों का ज्ञान अनुभव के द्वारा ही हो सकता है। ह्यूम मन की क्षमताओं और अक्षमताओं का एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। ह्यूम विशिष्ट अनुभववादी दार्शनिक हैं। ह्यूम अनुभववाद को उसकी तार्किक पराकाष्ठा पर पहुंचाते हैं। वे अनुभव के पथ पर दृढ़ता से चलते हुए जड़-जगत के साथ-साथ आत्मा और ईश्वर की सत्ता पर भी प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देते हैं। ह्यूम यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि अनुभववाद का सम्बन्ध किसी प्रकार के तत्त्ववाद (तत्त्वमीमांसा) से नहीं है। अनुभववाद शुद्ध ज्ञानमीमांसा है जिससे किसी भौतिक या आध्यात्मिक सत्ता की सिद्धि नहीं होती है।

ज्ञान की उत्पत्ति एवं घटक :— अनुभववादी होने के कारण ह्यूम भी अनुभव को ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र यथार्थ स्रोत मानते हैं। इनके अनुसार हमारा सारा ज्ञान इन्द्रिय प्रत्यक्षों के माध्यम से होता है।

ह्यूम के मतानुसार इन्द्रियप्रत्यक्ष के दो घटक हैं—

(1.) संस्कार (Impression) (2.) प्रत्यय (Ideas)

(1.) संस्कार (Impression) :— संवेदना तथा स्वसंवेदना को ही ह्यूम संस्कार कहते हैं। 'संस्कार' शब्द पहली बार ह्यूम के दर्शन में प्रयुक्त किया गया है। परन्तु इसका अर्थ नवीन नहीं है। लॉक महोदय ने संवेदन व स्वसंवेदन को जिस अर्थ में प्रयुक्त किया है, उसी अर्थ में यहाँ ह्यूम ने 'संस्कार' शब्द का प्रयोग किया है। ये संस्कार ही ज्ञान के मूल निर्मायक तत्त्व हैं। संस्कारों की प्राप्ति के पश्चात् प्रत्ययों की उत्पत्ति होती है। संस्कार प्रत्ययों की अपेक्षा

Scanned with CamScanner

प्राथमिक एवं पूर्ववर्ती होते हैं। ये प्रत्ययों की अपेक्षा सामान्यतः अधिक तीव्र, अधिक स्पष्ट, अधिक सजीव एवं अधिक प्रबल होते हैं। ये संस्कार एक-दूसरे से पृथक-पृथक, मौलिक एवं विशिष्ट होते हैं।

Scanned with CamScanner